अरुणाचल में एक शादी

पानी कौन लाए

पहले जब ज़मीन और आसमान बना ही था, तब पानी नहीं था और मनुष्य और जानवर दोनों बड़े परेशान थे।

एक दिन सारे मनुष्य व जानवर एक जगह मिले और चर्चा करने लगे कि हममें से कौन सबसे बुद्धिमान है, जो हमारे लिए पानी ला सकता है? सबने कहा, "हम तो नासमझ लोग हैं, हमें नहीं पता है पानी कहाँ मिलेगा तो हम पानी कैसे लाएँ?"

लेकिन बासम नाम की एक चिड़िया थी जिसने कहा,, "मैं जानती हूँ पानी कहाँ है।" सबने कहा, "कहाँ–कहाँ?" चिड़िया बोली, "जहाँ से सूरज उगता है, वहाँ पानी है। वहाँ एक बहुत बड़ा साँप है जिसने अपनी कुंडली में एक बड़े तालाब को कैद करके रखा है। अगर आप चाहो तो मैं वहाँ से पानी ला सकती हूँ।" सबने बासम से पानी लाने को कहा।

चिड़िया भी उड़कर उस जगह गई , मगर वहाँ साँप को देखकर डर गई। उसने सोचा रात होने तक इंतजार करते हैं और उसके बाद पानी चुराते हैं। रात हुई तो साँप सो गया। चिड़िया ने अपनी चोंच से उसकी दोनों आँखें फोड़ दीं। दर्द के मारे साँप ने कुंडली खोल दी और सारा पानी नदी के रूप में बहने लगा। तब से बासम पक्षी हमेशा नदी किनारे ही रहने लगी।

यह कहानी मैंने अपनी एक दोस्त चोन चोन से सुनी थी। चोन चोन अरुणाचल प्रदेश की है। वो ऐसी बहुत सी कहानियाँ सुनाती हैं। उसने बताया कि उसकी माँ जब कपड़े बुनती हैं तब खूब सारी कहानियाँ सुनाती हैं। अरुणाचल की महिलाएँ बहुत सुंदर डिजाईन के कपड़े बुनती हैं।

कुछ महीने पहले चोन चोन की बहन की शादी थी। शादी में चोन चोन ने मुझे भी बुला लिया, कहा शादी देख लो, हमारे लोगों से भी मिल लो, हमारे राज्य की भी सैर कर लो।

पहले तो मुझे डर लगा। अरुणाचल प्रदेश अपने मध्यप्रदेश से कितना दूर है! ट्रेन से जाओ तो भी दो–तीन दिन लग जाते हैं। रास्ते में बहुत सारे राज्य पार करना होगा।

मध्यप्रदेश से अरुणाचल प्रदेश जाने के लिए कौन–कौन से राज्य पार करने पड़ेंगे नक्शा नं 1 देखकर बताओ!

हिमालय पर्वत के पहाड़ी रास्ते से पैदल काफी दूर चलने पर चोन चोन का गाँव पड़ता है। फिर मैंने सोचा ऐसी नई जगह देखने का मौका फिर नहीं मिलेगा।

चोन चोन

मैंने अरुणाचल जाने का निश्चय किया। इससे पहले कि मैं शादी की बातें बताऊँ, मैं तुम्हें अरुणाचल प्रदेश के बारे में कुछ बता दूँ जो मैंने किताबों को पढ़कर जाना था।

1. *इस नक्शे में दो तरह के घर दिखाए गए हैं? उनमें क्या अंतर तुम्हें दिख रहे हैं?*
2. *नक्शे में जो लोग दिख रहे हैं, वे क्या काम कर रहे हैं?*
3. *यह प्रदेश मैदानी है या पहाड़ी?*
4. *इस प्रदेश में बहने वाली तीन नदियों के नाम लिखो? क्या ये नदियाँ चौड़ी हैं या सँकरी?*
5. *अरुणाचल की राजधानी ईटानगर किन दो नदियों के बीच के इलाके में बसा है?*
6. *अरुणाचल से लगे हुए कौन–कौन से देश हैं?*

हिमालय की गोद में

अरुणाचल प्रदेश अपने देश के पूर्वी छोर पर है। हिमालय पर्वत के बीच में यह राज्य बसा हुआ है। इन पहाड़ों के ऊपरी हिस्सों में हमेशा बर्फ जमी रहती है। निचले हिस्सों में घने वन हैं। इन पहाड़ों के बीच कई छोटे बड़े नदी नाले तेजी से बहते हैं। कुछ नदियों की चौड़ी घाटियाँ हैं, जहाँ कुछ समतल जमीन हैं।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अरुणाचल में गर्मी का मौसम ही नहीं होता। वहाँ नवंबर से फरवरी तक कड़ाके की ठंड पड़ती है और मार्च से ही पानी बरसने लग जाता है। बारिश बढ़ती जाती है और जून से सितंबर तक घनघोर मूसलाधार वर्षा होती है। अक्टूबर के अंत तक बारिश थमती है। मगर अब ठंड शुरू हो जाती है। यह प्रदेश पहाड़ों पर ऊँचाई पर है इसलिए अपने यहाँ से ज्यादा ठंड पड़ती है। यहाँ दो ही मौसम होते हैं, ठंड और बारिश का।

जब इतनी बारिश होती है तो जंगल घने होंगे ही। इनमें कई तरह के पेड़ों के अलावा बाँस और बेंत बहुत अधिक होते हैं। यहाँ के लोग बाँस और बेंत को बहुत काम में लेते हैं। जब मैं उनके गाँव में गई तो सोचा भी नहीं था कि बाँस के इतने उपयोग हो सकते हैं। खैर ये बात बाद में बताऊँगी। ऊँचे स्थानों पर चीड़ के पेड़ होते हैं।

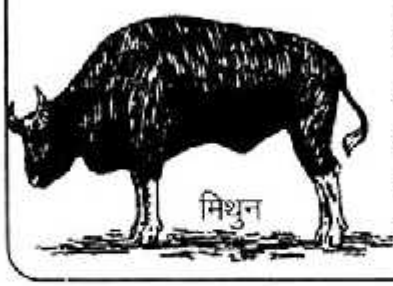
मिथुन

याक

अरुणाचल के जंगलों में शेर, सुअर, हिरण, हाथी आदि तो होते ही हैं, लेकिन यहाँ दो ऐसे जानवर भी होते हैं, जो अपने आस–पास नहीं होते। ये हैं याक और मिथुन। याक मोटे भैंसे जैसे दिखता है पर इसका शरीर पूरी तरह बालों से ढँका होता है। यह केवल हिमालय व तिब्बत जैसे ऊँचे ठंडे इलाकों में होता है। इसे पाला जाता है। इस पर सामान लादा जाता है। इसकी सवारी भी की जाती है।

मिथुन अरुणाचल के लोगों का मुख्य पालतू जानवर है। इसे मांस के लिए पाला जाता है। जिसके पास अधिक मिथुन हैं, उसे धनवान माना जाता है।

अरुणाचल प्रदेश में कई आदिवासी कबीले रहते हैं– अपातानी, आदि, वांचू, मोनपा आदि। ये लोग अलग–अलग इलाकों में रहते हैं। इनकी भाषा, धर्म, रीति–रिवाज़ आदि भी अलग–अलग हैं।

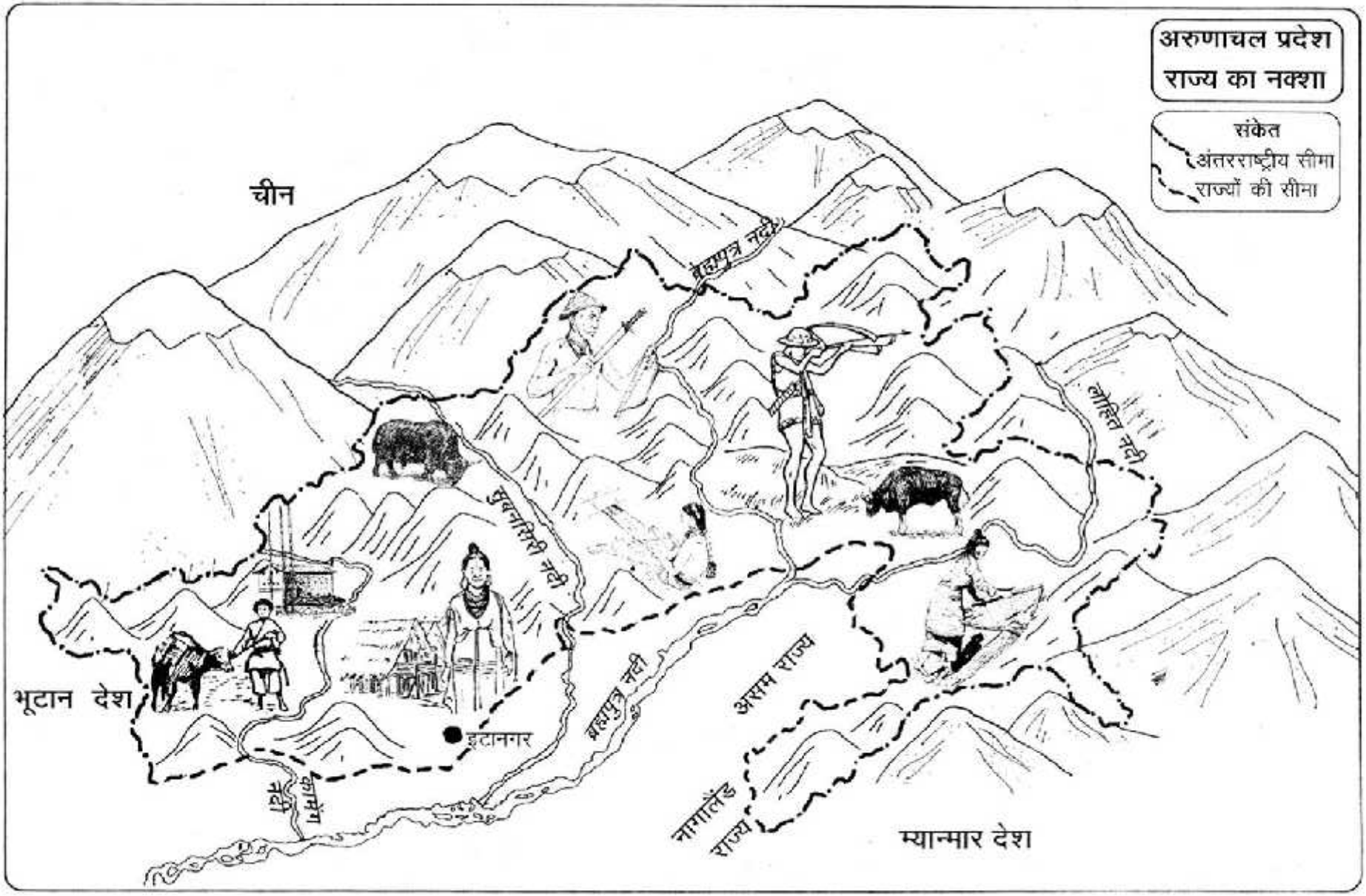

अरुणाचल प्रदेश
राज्य का नक्शा
संकेत
अंतरराष्ट्रीय सीमा
राज्यों की सीमा
चीन
ब्रह्मपुत्र नदी
लोहित नदी
सुबनसिरी नदी
भूटान देश
ईटानगर
कामेंग नदी
ब्रह्मपुत्र नदी
असम राज्य
नागालैंड राज्य
म्यान्मार देश

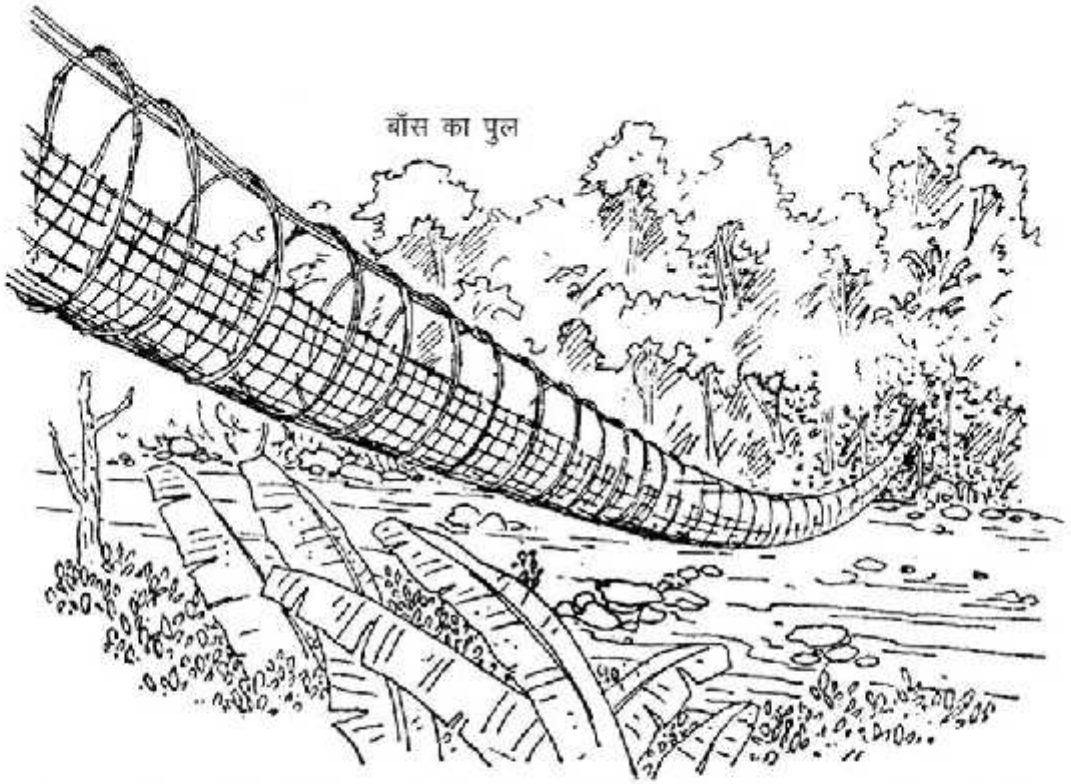

बाँस का पुल

चोन चोन, आदि कबीले की है। उसी के गाँव पहुँचने के लिए मैं एक पहाड़ी रास्ते से चल रही थी। कुछ दूरी पर एक गहरी घाटी दिखी जिसमें बहुत ही तेज पानी बह रहा था। पता चला कि नदी के उस पार चोन चोन का गाँव है। अब नदी कैसे पार करूँ? मुझे रास्ता दिखाने के लिए चोन चोन का भाई साथ था। उसने मुझे कुछ दूरी पर बना एक पुल दिखाया। यह पुल पत्थर, सीमेंट या लकड़ी का नहीं बना था, न ही जमीन पर टिका था। यह पूरी तरह बेंत और बाँस से बना था और नदी के दोनों किनारों पर दो मजबूत पेड़ों से लटक रहा था। ऐसा लग रहा था कि यह खूब लम्बा झूला है। इस पर चलने में मुझे बहुत डर लग रहा था। पूरा पुल खूब झूल रहा था। किसी तरह धीरे–धीरे चलकर मैं पुल पार कर गई।

गाँव में मुझे चोन चोन और उसकी सहेलियाँ मिलीं। उनके साथ मैं चोन चोन के घर गई। उसका घर अपने घरों से बहुत फर्क था। बाँस के खंभों पर एक बाँस का चबूतरा था। जिस पर एक लम्बा कमरा बना था। इसकी दीवार भी बाँस की ही बनी थी। छत ढलवा और घासफूंस की बनी थी। अरुणाचल में ज़्यादातर घर इसी तरह बनते हैं। वे जमीन पर नहीं बल्कि जमीन के ऊपर बाँस के चबूतरों पर बनते हैं। वे जमीन पर घर क्यों नहीं बनाते हैं? तुम जानते हो कि यहाँ बहुत अधिक वर्षा होती है। इस कारण जमीन पर हमेशा पानी बहता रहता है और सीलन बनी रहती है। इस नमी के कारण तरह–तरह के कीड़े, मकोड़े, बिच्छू, साँप, चूहे और जोंक आ जाते हैं। इन सबसे बचने के लिए अरुणाचल के लोग खंभों पर घर बनाते हैं।

बाँस के खंभों पर बाँस के घर! घर के अंदर जाओ तो बाँस की और भी चीजें देख सकते हो–पानी भरकर लाने के लिए मोटे–मोटे बाँस के बर्तन दिखेंगे। यहाँ तक कि बाँस के बर्तनों में खाना भी पकाया जाता है।

चोन चोन ने मुझे बताया कि उसकी बहन की शादी की तैयारियाँ पूरी हो चुकीं थीं। लड़का और लड़की के परिवार वालों के बीच लम्बे समय से बातचीत चलती रही। यही कि लड़की ब्याह कर ले जाने के लिए लड़के का परिवार लड़की के माँ–बाप को क्या–क्या देगा। अंत में यह तय हुआ था कि 7 मिथुन, 3 सुअर और 2 गायें ही लडके वाले चोन चोन के परिवार को देंगे। लड़की वाले कुछ सुंदर घंटियाँ और कपड़े देंगे।

धान कूट रहे हैं

मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ– मैंने कहा, "हमारे यहाँ तो लड़की वाले बहुत सी चीजें दहेज के रूप में लड़के वालों को देते हैं। अरुणाचल में तो ठीक उल्टा होता है। लड़के वाले लड़की के परिवार को दहेज देते हैं।"

1. *अपने प्रदेश में जब तेज़ गर्मी पड़ती है, तब अरुणाचल में मौसम कैसा होता है?*
2. *इनमें से कौन–सा जानवर अरुणाचल में नहीं मिलेगा (क) याक (ख) शेर (ग) ऊँट (घ) सुअर*
3. *अरुणाचल के लोग पहाड़ों पर सामान ले जाने के लिए किस जानवर का उपयोग करते हैं?*
4. *इनमें से किन चीजों का उपयोग अरुणाचल के पुलों में किया जाता है?*

   (क) सीमेंट (ख) ईंट (ग) बाँस (घ) बेंत
5. *लड़के वालों ने लड़की वालों को दहेज में क्या–क्या देना तय किया?*

चोन चोन का घर

बोने की तैयारी

कुछ देर तक हम गाँव में घूमते रहे, फिर हम खाना खाने बैठे। लकड़ी और बाँस के बर्तनों में तरह–तरह के पकवान रखे थे। आठ दस तरह के मांस, तरह तरह की सब्जियाँ और साग, बाँस के कोंपल, चावल, मक्का। साथ में कई तरह के फल भी थे अन्नानास, आलू बुखारा, सेब और बहुत से फल जिन्हें मैंने पहले नहीं देखा था। मैंने देखा उनके भोजन में दूध, दही या मक्खन नहीं है। चोन चोन ने बताया कि वे दूध का उपयोग ही नहीं करते हैं। हाँ आजकल कुछ लोग चाय पीने लगे हैं।

खाने के बाद चोन चोन की माँ ने कहा, "तुम लोग खेत से कुछ सब्जी ले आना शादी में जरूरत पड़ेगी।"

खेत काफी दूर घने जंगल के बीच था। चोन चोन ने बताया कि वे लोग हर दो–तीन साल में जंगल में नई जगह खेती करते हैं। गाँव के सब लोग मिलकर जंगल साफ करते हैं। लकड़ी, पत्ते आदि सूख जाने पर उन्हें जला देते हैं। फिर उस राख पर बीज बोते हैं। वे अपने खेतों पर हल नहीं चलाते।

पर मज़ेदार बात यह है कि वे कई तरह के बीज एक ही खेत में एक साथ बोते हैं। चावल, मक्का, भिंडी, टमाटर आदि। जब वे पक जाते हैं तब उन्हें अलग–अलग काट लेते हैं। एक ही जगह दो–तीन साल खेती करने के बाद वे किसी दूसरे जंगल को साफ करके खेत तैयार करते हैं। पुरानी जमीन पर अब फिर से जंगल उगने लगेगा। इस तरह की खेती को झूम खेती कहते हैं।

सब्जी तोड़ते–तोड़ते मैंने चोन चोन से पूछा– "क्या अरुणाचल में सभी लोग इसी तरह खेती करते हैं?" उसने कहा, हाँ अपातानी लोगों को छोड़कर सभी झूम खेती ही करते हैं। अपातानी लोग समतल नदी घाटी पर रहते हैं। वहाँ बहुत अच्छे सिंचित धान के खेत हैं। वहाँ एक ही खेत में साल दर साल खेती होती है।

तुम्हें एक मज़ेदार बात बताऊँ – अपातानी महिलाएँ नाक में लकड़ी के बड़े–बड़े गुटके पहनती हैं। इसे वे सुन्दर मानती हैं।

बातें करते–करते हम घर लौटने लगे। तब तक अंधेरा हो गया था। जैसे ही हम गाँव के पास आए तो हमें बल्ब की रोशनी दिखने लगी। मैंने चोन चोन से कहा, "मुझे तो पता नहीं था कि तुम्हारे गाँव में बिजली है। रास्ते में मुझे कोई तार नहीं दिखे।"

अपातानी महिला

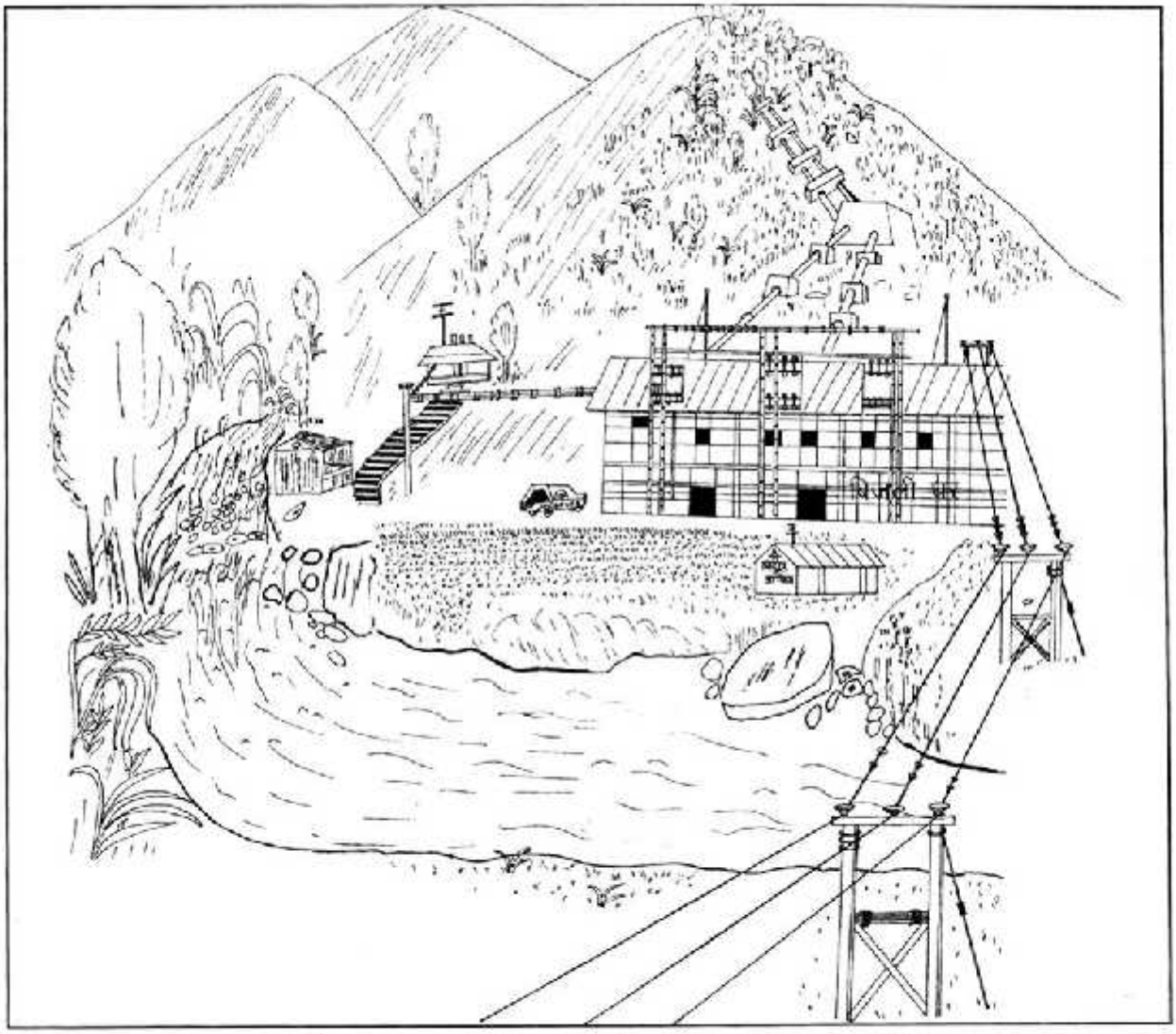

चोन चोन ने बताया, "पिछले साल से ही हमारे गाँव में बिजली बनने लगी है। पहले तो लालटेन की रोशनी से काम चलाते थे।" मुझे यह बात अजीब लगी, "तुम्हारे गाँव में बिजली कैसे बनती है वो तो बाँध या कारखानों में बनती है।"

चोन चोन बोली, "नहीं वो देखो बिजली घर – वहाँ बिजली बनती है।" उस पहाड़ के ऊपर से झरने का पानी पाइपों से तेजी से बहकर आता है और बिजली घर की मशीन उससे चलती है। इसी से हमारे गाँव के उपयोग के लिए बिजली बन जाती है। इसकी देख रेख मेरे बड़े भैया खुद करते हैं।"

मैं सोचने लगी, 'ऐसे बिजली घर हर गाँव में बन जाएँ तो कितना अच्छा रहेगा!'

अगले दिन लड़के वाले जुलूस में आए। साथ में कई मिथुन, सुअर, चावल आदि भी लाए। शादी की रस्म पूरी हुई और चोन चोन की बहन उनके साथ चली गई। शाम को लड़के वालों के यहाँ, लड़की वालों को भोजन के लिए बुलाया गया। सबने खूब खाया। फिर सबको घर ले जाने के लिए मांस आदि मिला। सब खुशी–खुशी घर लौटे।